



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भूमि उपयोग में कालिक एवं स्थानिक परिवर्तन प्रतिरूप – कौशाम्बी जिले के संदर्भ में

¹निशी इफित्तखार (शोध छात्रा)

²डा० अर्चना त्रिपाठी एशोसिएट प्रोफेसर

³अभय प्रताप सिंह (शोध छात्र)

¹शोध छात्रा

भूगोल विभाग, सी०एम०पी० डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, (उत्तर प्रदेश) भारत

²एशोसिएट प्रोफेसर

भूगोल विभाग, सी०एम०पी० डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, (उत्तर प्रदेश) भारत

³शोध छात्र

भूगोल विभाग सी०एम०पी० डिग्री कॉलेज प्रयागराज
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, (उत्तर प्रदेश) भारत

सारांश

भूमि एक अमूल्य (अक्षय) संसाधन है, जिसका उपयोग मानव विभिन्न क्रिया- कलापों को सम्पन्न करने के लिए करता है। कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग परिवर्तन का प्रमुख कारण जनसंख्या दबाव, खाद्यानों की बढ़ती मांग, विकासात्मक गतिविधियों एवं प्रोद्योगिकीय उन्नति द्वारा देखा जाता है। कौशाम्बी जिले में सर्वाधिक वृद्धि वर्तमान परती भूमि में 93.95% तथा अन्य परती भूमि में 57.34% पायी गयी है, जबकि सर्वाधिक कमी वन क्षेत्र में -72.% तथा कृषि बेकार भूमि में -12% में दर्ज की गयी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वर्ष 2009-2019 के समयान्तराल के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है तथा आंकड़ों को द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए औसत, प्रतिशत तथा अन्य सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द - भूमि उपयोग, वन, वर्तमान परती भूमि, अन्य परती भूमि, अन्य परती भूमि

प्रस्तावना

विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जो सतत् रूप से चलती रहती हैं। प्राचीन काल में विकास के मापदंड अत्यंत संकुचित थे। विकास से अभिप्राय अत्यधिक उत्पादन तथा आय से लिया जाता था, जिससे राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सके। बीसवीं शताब्दी में विकास की परिभाषा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। अब विकास को बहुआयामी प्रक्रिया माना जाता है। जिसमें विचारात्मक, भावात्मक, संस्करात्मक, गुणात्मक सभी विकास को सम्मिलित किया जाता है। कृषि क्षेत्र में विकास से तात्पर्य उन्नत किस्म के बीजों, उर्वरकों, सिंचाई के साधनों तथा मशीनों आदि के प्रयोग से है। कृषि के विकास स्तर को कोई एक कारक प्रभावित नहीं करता अपितु अनेक कारक जैसे कृषि योग्य क्षेत्र का आधारभूत सुविधाएँ, कृषि प्रोद्योगिकी की स्थिति तथा सन्तुलित मानव संसाधन आदि प्रभावित करते हैं। कृषि से जहाँ मनुष्य के खाद्यानों की आवश्यकता की पूर्ति होती है वही दूसरी ओर उद्योगों के लिए कच्चा माल भी कृषि से प्राप्त होता है।

साहित्यिक अवलोकन

भूमि उपयोग से आशय किसी स्थान की धरातलीय विशेषताओं के अनुरूप मनुष्य द्वारा उसका उपयोग करना है। जबकि भूमि उपयोग का अभिप्राय भूमि की प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं के अनुरूप उपयोग है (फॉक्स, 1956)। वुड (1977) के अनुसार 'भूमि प्रयोग' केवल प्राकृतिक भूदृश्य के संदर्भ में ही नहीं, अपितु मानवीय क्रियाओं पर आधारित उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए। वैनजेटी (1972) के अनुसार "भूमि उपयोग प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही उपादानों के संयोग का प्रतिफल है। बी० बी० सिंह के अनुसार "कृषि से पूर्व की अवस्था के लिए जिसके अंतर्गत प्राकृतिक पर्यावरण का पूर्णतया उपयुक्त होगा, परंतु जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भूमि के उचित या अनुचित उपयोग के पश्चात लाभप्रद उपयोग अपनाता है" तो उसे भूमि उपयोग कहना अधिक संगत होगा।"

भूमि उपयोग सर्वेक्षण और उनके अध्ययनों से सम्बंधित तकनीकी ज्ञान को विकसित करने में जी० पी० मार्स (1864), सी० ओ० सावर, डब्लू० डी० जोन्स एवं वी० सी० फिंच जैसे विद्वानों ने विशेष योगदान दिया है। भारत में सर्वप्रथम भूमि उपयोग सर्वेक्षण एवं शोध कार्य का प्रारम्भ प्रो० एस० पी० चटर्जी (1945-1952) द्वारा पश्चिमी बंगाल के चौबीस परगना और हावड़ा जिलों में किया गया था। प्रो० वी० एल० एस० प्रकाशराव ने (1947-56) गोदावरी नदी के क्षेत्र में भूमि उपयोग का शोध पूर्ण सर्वेक्षण एवं विवेचात्मक अध्ययन किया है। प्रो० एम० शफी (1963) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में भूमि उपयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

उद्देश्य

- कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग परिवर्तन प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
- कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-19 के समयान्तराल में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन का विश्लेषण करना।
- भूमि उपयोग के विभिन्न वर्गों की विवेचना करना।

आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं विधियां

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्ष 2009-2019 के समयान्तराल के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है तथा आंकड़ों को द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं। जिसमें जिला सांख्यिकीय पत्रिका, विभिन्न शोध पत्र, पत्रिका तथा विभिन्न पुस्तकों से लिया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए औसत, प्रतिशत तथा विभिन्न सांख्यिकीय विधियों तथा ग्राफ आदि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान कौशाम्बी जिला 4 अप्रैल 1997 को इलाहाबाद जिले से बना है। जिले के उत्तर में प्रतापगढ़, दक्षिण में चित्रकूट, पूर्व में इलाहाबाद और पश्चिम में फतेहपुर जिला स्थित है। जिले का अक्षांशीय विस्तार 24°47' उत्तर से 25°47' उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 81°12' पूर्व से 81°47' के मध्य दक्षिण पूर्व में स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्र 1780 वर्ग किमी० है। जिले को तीन तहसील सिराथू, मंझनपुर तथा चायल एवं 8 विकासखंड कड़ा, सिराथू, सरसवां, मंझनपुर, कौशाम्बी, मूरतगंज, चायल, तथा नेवादा में विभाजित किया गया है। जिले में मुख्य रूप से दो प्रमुख नदियां गंगा तथा यमुना प्रवाहित होती हैं, जिले की जलवायु शीतोष्ण है। जिले का अधिकतम तापमान 46.7°C और न्यूनतम 5.6°C रहता है। वर्षा का औसत 954 मिली मीटर है। 2011 में जिले की कुल जनसंख्या 1,599,596 जिसमें पुरुष और महिला की जनसंख्या क्रमशः 52.42% तथा 47.58% हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार कौशाम्बी जिले का घनत्व 899 प्रति वर्ग किलो० है। साक्षरता का प्रतिशत 61.26 है, जिसमें पुरुष साक्षरता 72.78% तथा महिला साक्षरता 48.56% है। लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों पर 908 महिलाएं हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार कौशाम्बी जिले में 92.22% आबादी गांव में तथा 7.78% शहरी क्षेत्र में निवास करती हैं। जिले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करती है।

भूमि उपयोग

कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग सम्बन्धित आंकड़ों को जिला सांख्यिकीय पत्रिका के अनुसार विभिन्न श्रेणियों वन, कृष्य बेकार भूमि, वर्तमान परती भूमि, अन्य परती भूमि, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि, चरागाह, उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में विभाजित किया गया है।

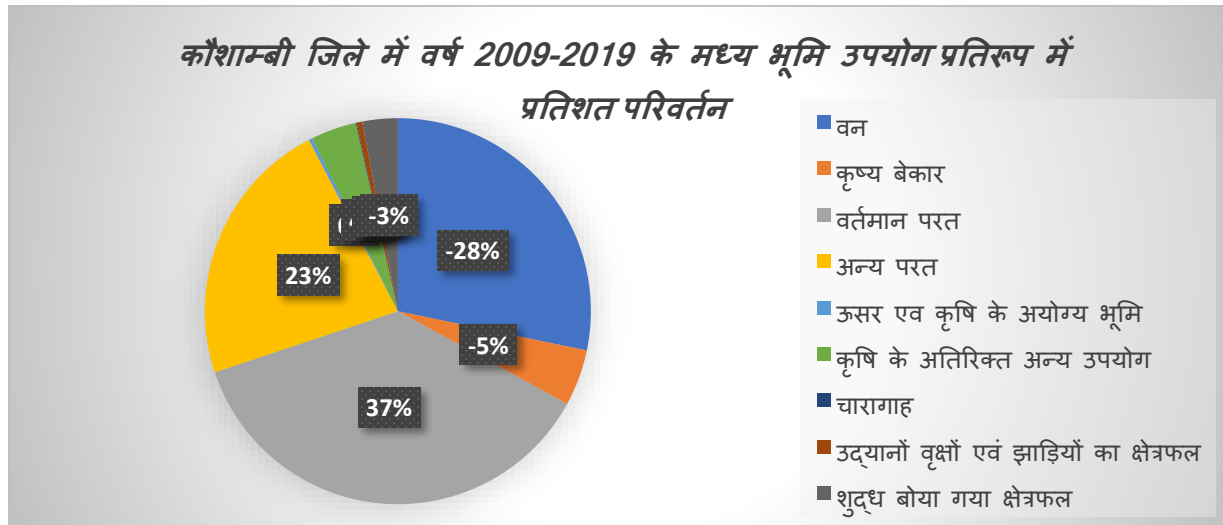
सारणी -1 कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन (2009- 2019)

भूमि उपयोग (हेक्टे. में)	2009	2019	प्रतिशत परिवर्तन
कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	178729	178810	0.045
वन	702	195	-72
कृष्य बेकार	3801	3321	-12
वर्तमान परत	6778	13146	93.95
अन्य परत	4745	7466	57.34
ऊसर एव कृषि के अयोग्य भूमि	7825	7884	0.75

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग	18708	20528	9.72
चारागाह	523	524	0.191
उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	3584	3628	1.22
शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	132063	122118	-7.53

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

चित्र संख्या - 1



वन - वन किसी देश की अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त भौतिक दशाओं को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे मानव तथा पर्यावरण दोनों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त होते हैं। वन पशुचारण तथा पशुपालन के अतिरिक्त जीवों तथा पक्षियों को आवास, जनजातियों के निवास स्थान तथा प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करते हैं। 1952 की राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार भौगोलिक क्षेत्र के 33 प्रतिशत में (पर्वतीय भाग में 60 प्रतिशत और मैदानी भाग में 20 प्रतिशत) वनों का विस्तार आवश्यक माना गया है (तिवारी 2009)। कौशाम्बी जिले में वन का क्षेत्रफल राष्ट्रीय वन नीति द्वारा मैदानी भागों में निर्धारित 20 प्रतिशत से अत्यंत कम है। जिले में विकासखण्डवार वनों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2009 में विकासखण्ड सिराथू में 32.33% सर्वाधिक वन आच्छादित क्षेत्र तथा चायल वन विहीन क्षेत्र था, जबकि वर्ष 2019 में सर्वाधिक वन आच्छादित विकासखण्ड कड़ा 41.02% हो गया तथा चायल वन रहित क्षेत्र पुनः था।

वनों के क्षेत्रफल में हास का मुख्य कारण वर्तमान परती भूमि, ऊसर एवमं कृषि के आयोग्य भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि में वृद्धि है। अतः यह कहा जा सकता है कि जिले में वनों के हास का मुख्य कारण मानवीय हस्तक्षेप जैसे अधिवासो के निर्माण के लिये वनों की कटाई, परिवहन सुविधा के लिए सड़क मार्ग का निर्माण तथा अन्य घरेलू उपयोग है।

सारणी- 2 कौशाम्बी जिले में विकासखण्डवार वन क्षेत्र का परिवर्तन प्रतिरूप (2009-2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	218	31.05	80	41.02	-63.30
सिराथू	227	32.33	28	14.35	-87.66
सरवां	117	16.66	17	8.71	-85.47
मंझनपुर	5	0.71	5	2.56	0
कौशाम्बी	4	0.56	4	2.05	0
मूरतगंज	116	16.52	45	23.07	-61.20
चायल	0	0	0	0	0
नेवादा	15	2.13	15	7.69	0
कुल	702	100	195	100	-72.22

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

जिले में वर्ष 2009 से 2019 के समयान्तराल में वनों के द्वारा आच्छादित क्षेत्र 702 हेक्टेयर से 195 हेक्टेयर शेष रह गया, जिसमें -72.2% का हास देखा गया। विकासखण्डवार आंकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक हास सिराथू में -87.6%, सरसवां में -85.47%, कड़ा में -63.30% तथा मूरतगंज में -61.20% हुआ है। जिले में मंझनपुर, कौशाम्बी, चायल तथा नेवादा में किसी भी प्रकार की वृद्धि या हास की प्रवृत्ति नहीं देखी गयी।

शुद्ध वापित क्षेत्र

कृषि कार्य में प्रयोग होने वाली भूमि को शुद्ध वापित क्षेत्र या शुद्ध बोया गया क्षेत्र कहते हैं। भूमि और जलवायु की प्रचुर प्रकृति के साथ - साथ मिट्टी की आंतरिक समृद्धि ने हमेशा किसानों को भूमि के अधिक से अधिक शोषण के लिए आकर्षित किया है। दूसरी ओर जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि और आजीविका के वैकल्पिक साधनों के आभाव के कारण खेती योग्य भूमि पर दबाव बढ़ा किन्तु वर्तमान समय में आजीविका के अनेक वैकल्पिक साधनों के उपलब्ध होने के कारण जिले में शुद्ध वापित क्षेत्र में कमी देखने को मिली हैं। जिले में शुद्ध बोया गये क्षेत्र में हास का मुख्य कारण जोतो का आकार में हास, जलवायु विषमता, सिंचाई के साधनों की कमी, बढ़ती जनसंख्या तथा आजीविका के अन्य वैकल्पिक साधनों की उपलब्धता है।

सारणी - 3 कौशाम्बी में शुद्ध वापित क्षेत्र में परिवर्तन प्रतिरूप (2009-2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	17769	13.45	17458	14.29	-1.75
सिराथू	24225	18.34	22220	18.19	-8.27

सरसवां	21061	15.94	20418	16.71	-3.05
मंझनपुर	15482	11.72	15670	12.83	1.21
कौशाम्बी	16847	12.75	16150	13.22	-4.13
मूरतगंज	13299	10.07	12403	10.15	-6.73
चायल	6881	5.21	5096	4.17	-25.94
नेवादा	16499	12.49	12703	10.40	-23.00
कुल	132063	100	122118	100	-7.53

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009 - 2019 के समयान्तराल में शुद्ध बोया गया क्षेत्र में -7.53% की कमी देखी गई है। विकासखण्ड स्तर पर 2009- 2019 के मध्य चायल में -25.94%, नेवादा में -23%, सर्वाधिक कमी दर्ज की गयी हैं, जबकि केवल मंझनपुर विकासखण्ड में 1.21% की वृद्धि देखी गयी हैं।

सारणी- 4 कौशाम्बी शुद्ध वापित क्षेत्र परिवर्तन वितरण प्रतिरूप (2009-2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
-7.84	उच्च	6	मंझनपुर, कौशाम्बी, मूरतगंज, कड़ा, सिराथू, सरसवां
-16.89	मध्यम	1	नेवादा
-25.94	निम्न	1	चायल

कौशाम्बी जिले में सर्वाधिक वृद्धि -7.84% मंझनपुर, कौशाम्बी, मूरतगंज, कड़ा, सिराथू, सरसवां विकासखण्ड में तथा न्यूनतम वृद्धि -25.94% चायल विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि

वह भूमि जो पिछले पाँच वर्षों या उससे अधिक वर्षों तक परती या अकृषित है तथा किन्हीं कारणों से ऐसी भूमि को कृषि कार्य हेतु उपयोग में नहीं लाया गया हो, जैसे व्यर्थ पड़ी भूमि, चारागाह, वृक्षों के झुंड व बंजर भूमि आदि (गुप्ता, बीशट तथा नाथ 2019)।

जिले में कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि में वृद्धि दो विकासखण्ड चायल 29.62% तथा नेवादा 18.47% में सर्वाधिक देखने को मिलती है, जबकि विकासखण्ड कड़ा में -20.54%, मूरतगंज-18.52%, तथा सिराथू में -18.18% की कमी पायी गयी हैं।

सारणी- 5 कौशाम्बी कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009-2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	998	26.25	793	23.87	-20.54

सिराथू	825	21.70	675	20.32	-18.18
सरसवां	278	7.31	242	7.28	-12.94
मंझनपुर	401	10.54	370	11.14	-7.73
कौशाम्बी	294	7.73	254	7.64	-13.60
मूरतगंज	583	15.33	475	14.30	-18.52
चायल	108	2.84	140	4.21	29.62
नेवादा	314	8.26	372	11.20	18.47
कुल	3801	100	3321	100	-12.62

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-19 के समयान्तराल में कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि के क्षेत्रफल में -12.62 % का हास हुआ है। विकासखंड स्तर पर सर्वाधिक वृद्धि चायल में 29.62% तथा नेवादा में 18.47% दर्ज की गयी है, जबकि सर्वाधिक कमी कड़ा -20.54%, मूरतगंज -18.52%, सिराथू -18.18%, कौशाम्बी 13.61%, सरसवां -12.94% तथा मंझनपुर में 7.73% में देखने को मिलती है।

सारणी- 6 कौशाम्बी कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि का वितरण प्रतिरूप

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
12.90	उच्च	2	चायल, नेवादा
-3.81	मध्यम	0	-
-20.54	निम्न	6	कड़ा, सिराथू, मूरतगंज सरसवां, मंझनपुर, कौशाम्बी

कौशाम्बी जिले में कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 12.906 चायल तथा नेवादा विकासखण्ड में तथा न्यूनतम वृद्धि -20.54 कड़ा, सिराथू, मूरतगंज सरसवां, मंझनपुर तथा कौशाम्बी विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

वर्तमान परती भूमि

उर्वरता की पुनः प्राप्ति, नमी संचय हेतु अथवा आर्थिक कारणों से किसी फसल वर्ष में बिना कुछ बोये ही छोड़ दी गयी भूमि वर्तमान परती भूमि कहलाती हैं। इसे नयी परती या चालू परती भी कहते हैं, क्योंकि यह भूमि चालू/ वर्तमान वर्ष में परती रहती है। वस्तुतः भूमि उपयोग प्रतिवेदन तैयार करने के समय जो भूमि नहीं बोयी गयी होती है परंतु पूर्व के वर्ष में बोयी हुई होती हैं, नई परती कहलाती है (मोहम्मद,1992)। कृषिगत सुविधाओं के आभाव में जिले में निरन्तर वर्तमान परती भूमि में वृद्धि देखने को मिलती है।

सारणी- 7 कौशाम्बी वर्तमान परती भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	

कड़ा	423	6.24	1845	14.03	336.17
सिराथू	387	5.70	1948	14.81	403.35
सरसवां	227	3.34	683	5.19	200.88
मंझनपुर	451	6.65	417	3.17	-7.53
कौशाम्बी	475	7.00	485	3.68	2.10
मूरतगंज	2337	34.47	3179	24.18	36.02
चायल	420	6.19	712	5.41	69.52
नेवादा	2058	30.36	3877	29.49	88.38
कुल	6778	100	13146	100	93.95

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-2019 के मध्य वर्तमान परती भूमि के क्षेत्र में 93.95% की वृद्धि देखी गयी। सर्वाधिक वर्तमान परती भूमि सिराथू विकासखण्ड 403.35% तथा न्यूनतम वृद्धि कौशाम्बी विकासखण्ड 2.105% में पायी गयी है, जबकि मंझनपुर -7.53% एकमात्र ऐसा विकासखण्ड है, जिसमें हास की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

सारणी-8 कौशाम्बी वर्तमान परती भूमि का वितरण प्रतिरूप (2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
266.39	उच्च	2	कड़ा, सिराथू,
129.42	मध्यम	2	सरसवां, नेवादा
-7.53	निम्न	4	मंझनपुर, कौशाम्बी मूरतगंज, चायल

कौशाम्बी जिले में वर्तमान परती भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 266.39% कड़ा तथा सिराथू विकासखण्ड में तथा न्यूनतम वृद्धि -7.53% मंझनपुर, कौशाम्बी मूरतगंज, चायल विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

अन्य परती भूमि

वह भूमि जिस पर कृषि कार्य दो से पांच वर्षों के समयान्तराल तक स्थगित रहा हो उसे अन्य परती के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। भूमि पर इतने समय तक उत्पादन में प्रयुक्त न होने के कारण मानसून में परिवर्तन, आर्थिक स्थिति निम्न, जलापूर्ति की समस्या तथा निम्न आधारभूत ढांचे आदि हैं।

सारणी- 9 कौशाम्बी अन्य परती भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	429	9.04	840	11.25	95.80

सिराथू	413	8.70	763	10.21	84.74
सरसवां	421	8.87	717	9.60	70.30
मंझनपुर	423	8.91	787	10.54	86.05
कौशाम्बी	444	9.35	806	10.79	81.53
मूरतगंज	1022	21.53	1189	15.92	16.34
चायल	746	15.72	1008	13.50	35.12
नेवादा	847	17.85	1356	18.16	60.09
कुल	4745	100	7466	100	57.34

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष (2009-2019) के मध्य अन्य परती भूमि में सर्वाधिक वृद्धि कड़ा में 95.80%, मंझनपुर में 86.05%, सिराथू में 84.74% कौशाम्बी 81.53% तथा सरसवां में 70.30% दर्ज की गई, जबकि न्यूनतम वृद्धि मूरतगंज में 16.34% पायी गयी है।

सारणी- 10 कौशाम्बी अन्य परती भूमि का वितरण प्रतिरूप (2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
69.31	उच्च	5	कड़ा, सिराथू, मंझनपुर, कौशाम्बी, सरसवां
42.82	मध्यम	2	नेवादा, चायल
16.34	निम्न	1	मूरतगंज,

कौशाम्बी जिले में अन्य परती भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 69.3% कड़ा, सिराथू, मंझनपुर, कौशाम्बी तथा सरसवां विकासखण्ड में तथा न्यूनतम वृद्धि 16.34% मूरतगंज विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि

ऊसर भूमि उस भूमि को कहते हैं जिसमें लवणों की अधिकता अर्थात सोडियम लवणों की उच्च मात्रा पाई जाती है।

सारणी-11 कौशाम्बी ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	1602	20.47	1693	21.47	5.68
सिराथू	1637	20.92	1711	21.70	4.52
सरसवां	384	4.90	384	4.87	0
मंझनपुर	796	10.17	786	9.96	-1.25

कौशाम्बी	970	12.39	951	12.06	-1.95
मूरतगंज	1360	17.38	1313	16.65	-3.45
चायल	521	6.65	501	6.35	-3.83
नेवादा	555	7.09	545	6.91	-1.80
कुल	7825	100	7884	100	0.75

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-2019 के समयान्तराल में जिले में ऊसर भूमि के क्षेत्र में .75% की वृद्धि हुई है। जिले के दो विकासखण्डों कड़ा (5.68%) तथा सिराथू (4.52%) में सर्वाधिक वृद्धि देखी गई, जबकि अन्य विकासखण्डों में कमी दर्ज की गई, केवल सरसवाँ विकासखण्ड में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है।

सारणी- 12 कौशाम्बी ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का वितरण प्रतिरूप (2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकासखण्ड की संख्या	विकासखण्ड
2.507	उच्च	2	कड़ा, सिराथू
-0.666	मध्यम	1	सरसवाँ
-3.839	निम्न	5	मंझनपुर, कौशाम्बी, नेवादा, मूरतगंज, चायल

कौशाम्बी जिले में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 2.50% कड़ा तथा सिराथू विकासखण्ड में एवं न्यूनतम वृद्धि -3.83% मंझनपुर, कौशाम्बी, नेवादा, मूरतगंज, चायल विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि

इस श्रेणी में उन भूमियों को सम्मिलित किया जाता है, जो ग्रामीण व नगरीय, अधिवास, एकाकी भवन, सड़क, रेलमार्ग, अन्य रास्ते आदि के लिए प्रयुक्त होती हैं। वे भूमियां जो जल प्रवाहों, नदियों या नहरों के अंतर्गत हैं भी इस श्रेणी में सम्मिलित की जाती हैं। इसके अलावा अन्य गैर कृषि प्रयोगों की भूमियां भी सम्मिलित की जाती हैं (सिंह, 2000)।

सारणी-13 कौशाम्बी कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	3196	17.08	3322	16.18	3.94
सिराथू	3435	18.36	3652	17.79	6.31

सरसवां	3270	17.47	3466	16.88	5.99
मंझनपुर	1804	9.64	1907	9.28	5.70
कौशाम्बी	2390	12.77	2529	12.31	5.81
मूरतगंज	1778	9.50	2256	10.98	26.88
चायल	935	4.99	1154	5.62	23.42
नेवादा	1900	10.15	2242	10.92	18
कुल	18708	100	20528	100	9.72

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-2019 के मध्य कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि के क्षेत्रफल में 9.73% की वृद्धि हुई है। विकासखंड स्तर पर परिवर्तन का विश्लेषण करने पर मूरतगंज में 26.88% तथा चायल में 23.42% की सर्वाधिक वृद्धि हुई, जबकि निम्न वृद्धि कड़ा विकासखंड में (3.94%) में देखने को मिलती है।

सारणी-14 कौशाम्बी कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि का वितरण प्रतिरूप (2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
19.23	उच्च	2	मूरतगंज, चायल
11.59	मध्यम	1	नेवादा
3.94	निम्न	5	कड़ा, सिराथू, सरसवां, मंझनपुर, कौशाम्बी

कौशाम्बी जिले में ऊसर एवं कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग हेतु भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 19.23% मूरतगंज तथा चायल विकासखण्ड में एवं न्यूनतम वृद्धि 3.94% कड़ा, सिराथू, सरसवां, मंझनपुर तथा कौशाम्बी विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

चारागाह

इसमें सभी प्रकार की चराई भूमि को सम्मिलित किया जाता है, चाहे वह स्थाई हो या अस्थायी। ऐसी भूमि मैदानों की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलती हैं। वह सभी मैदान जो पशुओं के चराई के लिए तथा ग्रामीण समूह। समुदाय के चारागाह के रूप में पाये जाते हैं, चारागाह कहलाते हैं। निजी स्वामित्व के रूप में भूमि का एक छोटा हिस्सा भी पाया जाता है।

सारणी-15 कौशाम्बी चारागाह भूमि का परिवर्तन प्रतिरूप (2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	33	6.30	32	6.10	-3.03
सिराथू	63	12.04	64	12.21	1.58

सरसवां	61	11.66	73	13.93	19.67
मंझनपुर	95	18.16	94	17.93	-1.05
कौशाम्बी	27	5.16	26	4.96	-3.70
मूरतगंज	48	9.17	47	8.96	-2.08
चायल	174	33.26	161	30.72	-7.47
नेवादा	22	4.20	27	5.15	22.72
कुल	523	100	524	100	0.19

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009 - 2019 के मध्य चारागाह भूमि के क्षेत्रफल में सर्वाधिक वृद्धि नेवादा 22.72% तथा सरसवां 19.67% तथा न्यूनतम वृद्धि सिराथू 1.59% पाया जाता है। जिले के पांच विकासखंड ऐसे भी हैं जहाँ चारागाह भूमि के क्षेत्रफल में ह्रास देखने को मिलता है, जिसमें सर्वाधिक ह्रास चायल विकासखंड में हुआ है।

सारणी-16 कौशाम्बी चारागाह भूमि का वितरण प्रतिरूप (2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
12.66	उच्च	2	नेवादा, सरसवां
2.59	मध्यम	0	-
-7.47	निम्न	6	कड़ा, कौशाम्बी, मूरतगंज, चायल सिराथू, मंझनपुर

कौशाम्बी जिले में चारागाह भूमि के वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 12.66% नेवादा तथा सरसवां विकासखण्ड में एवं न्यूनतम वृद्धि -7.47% कड़ा, कौशाम्बी, मूरतगंज, चायल सिराथू तथा मंझनपुर विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल

इस कोटि में कृषि योग्य उन सभी भूमियों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें शुद्ध कृषि क्षेत्र में सम्मिलित नहीं किया जाता है, किन्तु कतिपय सुधारों के पश्चात कृषि हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अंतर्गत उद्यानों, छोटे पेड़, छप्पर छाने वाली घासों, बांस की झाड़, झाड़ जो जलाने के काम में आती हैं, सम्मिलित किये जाते हैं, जो भूमि के उपयोग वितरण में उद्यान बाग के अंतर्गत सम्मिलित नहीं है (प्रताप, 2000)।

सारणी-17 कौशाम्बी उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्र का विकासखण्डवार परिवर्तन(2009- 2019)

विकासखंड	2009		2019		परिवर्तन
	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (प्रतिशत)	
कड़ा	449	12.52	437	12.04	-2.67
सिराथू	661	18.44	726	20.01	9.83

सरसवां	755	21.06	744	20.50	-1.45
मंझनपुर	393	10.96	376	10.36	-4.32
कौशाम्बी	410	11.43	385	10.61	-6.09
मूरतगंज	321	8.95	396	10.91	23.36
चायल	135	3.76	114	3.14	-15.55
नेवादा	460	12.83	450	12.40	-2.17
कुल	3584	100	3628	100	1.22

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2009-2019)

कौशाम्बी जिले में वर्ष 2009-19 के समयान्तराल में उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल में 1.23% की वृद्धि हुई है। विकासखंड में सर्वाधिक वृद्धि मूरतगंज 23.36% तथा न्यूनतम वृद्धि मंझनपुर में 1.21% देखने को मिलती है तथा सर्वाधिक हास चायल में -15.55% तथा न्यूनतम हास सरसवां विकासखंड -1.46% में पाया गया है।

सारणी-18 कौशाम्बी उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्र का विकासखण्डवार वितरण प्रतिरूप(2009- 2019)

प्रतिशत	स्तर	विकास खण्ड की संख्या	विकासखण्ड
10.39	उच्च	1	मूरतगंज
-2.58	मध्यम	3	कड़ा, सिराथू, नेवादा
-15.56	निम्न	4	चायल, कौशाम्बी, मंझनपुर, सरसवां

कौशाम्बी जिले में उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्र का विकासखण्डवार वितरण प्रतिरूप में सर्वाधिक वृद्धि 10.39% मूरतगंज विकासखण्ड में एवं न्यूनतम वृद्धि -15.56% चायल, कौशाम्बी, मंझनपुर, सरसवां विकासखण्ड में दर्ज की गयी है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्ष 2009 -19 के समयान्तराल के कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग के परिवर्तन प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है। जिले में वर्ष 2009 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के अंतर्गत 178729 हेक्टेयर भूमि पायी गयी है, जिसमें वन (.39%) कृष्य बेकार भूमि (2.13%), वर्तमान परती भूमि (3.79%), अन्य परती भूमि (2.65), ऊसर एवं कृषि के आयोग्य भूमि (4.38%), कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग (10.46%), चारागाह (.29%), उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल (2%) तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (73.89%) पाया जाता है। वर्ष 2019 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के अंतर्गत 178810 हेक्टेयर भूमि पायी गयी है, जिसमें वन (.11%) कृष्य बेकार भूमि (1.86%), वर्तमान परती भूमि (7.35%), अन्य परती भूमि (4.18%), ऊसर एवं कृषि के आयोग्य भूमि (4.41%), कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग (11.48%), चारागाह (.29%), उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल (2.03%) तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (68.29%) पाया जाता है। जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन का कारण जनसंख्या के बढ़ते दबाव, खाद्यान्नों की बढ़ती मांग, विकासात्मक गतिविधियों एवं प्रौद्योगिकी

उन्नति, अनिश्चित वर्षा आदि। जिले में जनसंख्या वृद्धि के कारण शुद्ध बोया गया सहित में -7.53% की कमी देखने को मिल रही हैं। इसके साथ - साथ वन भूमि (-72.2%), कृष्य बेकार क्षेत्र (-12.62) में हास देखने को मिला है। वनों का -72.2% हास एक बड़ी समस्या है। जिले में वर्तमान परती भूमि में (93.95%) , अन्य परती भूमि (57.34%), ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में (.75%), कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग (9.73%), उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्रफल में 1.23% की वृद्धि देखी गयी है। जिले में परती भूमि में अत्यधिक वृद्धि का कारण शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में कमी, ऊसर एवं कृषि के आयोग्य भूमि में वृद्धि का कारण रासायनिक खादों का अत्यधिक उपयोग तथा कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग वाली भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि के कारण मानव की अधिवास, सड़क, रेलमार्ग जैसी सुविधा की पूर्ति है।

अतः निष्कर्ता कहा जा सकता है कि कौशाम्बी जिले में भूमि उपयोग के विभिन्न वर्गों में समानता देखने को नहीं मिलती है। जिसका मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है। अतः यह आवश्यक है कि खाद्य भूमि जैसी समस्याओं के समाधान के लिए कृषि का यंत्रीकरण, उन्नत एवं वैज्ञानिक बीजों का प्रयोग तथा जैविक उर्वरकों एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग कृषि के सम्बंधित विकास के लिए किया गया जिससे वर्तमान के साथ भावी पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहे। भूमंडलीकरण उष्मन पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के निराकरण के लिए अत्यधिक को किया जाये। जिससे वनाच्छादित क्षेत्र के प्रतिशत में वृद्धि हो।

सन्दर्भ सूची

- Chatterjee, S.P. (1954), land Utilization in the District of 24 Pargana, West Bengal, B.C. law member lecturers, Kolkata.
- देवी श्यामली (2019), जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप, शोध मंथन, Vol.10, No. IV, ISSN:(P): 0976-5255(e):2454-339X, pp (1083- 1091).
- District Census handbook Kaushambi (2011) part XII, series- 10 Census of India (Uttar Pradesh).
- District Census handbook Kaushambi (2011), Village and Town wise Primary Census Abstract, Directorate of Census Operation Uttar Pradesh, part XII, B series- 10.
- गुप्ता के० एल०, बिष्ट के. एल एंड et. All (2019), जनपद जौनपुर में भूमि उपयोग परिवर्तन का कृषि भूमि पर प्रभाव, एक भौगोलिक विश्लेषण, रिव्यु ऑफ रिसर्च, Vol. (8). Issue 9.
- जिला सांख्यिकीय पत्रिका, वर्ष (2009 - 2019,) जिला सूचना सम्बन्धी वेबसाइट, (up.nic.in) उत्तर प्रदेश सरकार.
- कुमार अजित (2014), वैशाली जिले में भूमि उपयोग का वर्तमान प्रतिरूप, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रेवीएक्स, Vऑल.(1), Issue (1) E- ISSN 2348- 1269, P-153N 2349-5138.
- मिश्र डी. पी. (2021), भारत में भूमि उपयोग वर्गीकरण प्रणाली: एक पुनरावलोकन, रिव्यु ऑफ रिसर्च Vol.10, Issue10.
- Noor Mohammad (1992): Pattern of Agricultural Land Use in Ghagra - Rapti, Spatial Dimensions of Agricultural, Concept Publishing Company, New Delhi, P.157 ½ A.
- प्रताप के० (2000), सामान्य भूमि उपयोग एवं कृषि भूमि उपयोग, <http://indiawaterportal.org>, पृ० 5.
- Rao, V. C., S.P. (1956), Land Use Survey in India, It's Scope and Problems, Proceeding of The International Geography Seminar, India.
- Shafi, M. (1960): Land Utilization in Eastern Uttar Pradesh, A. M. U. Aligarh.

- सिंह, बी. बी. (1971), भूमि उपयोग क्षमता, अवस्था एवं अनुकूलतम उपयोग, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक -7, संख्या- 2, पृ 85-101.
- Singh, J. (1974), In Agricultural Atlas of India: A Geographical Analysis Vishal Publication kurukshetra, p. 105.
- तिवारी, आर. सी. एवं सिंह , बी. एन. (2009),भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद । पृ० संख्या 76.
- तिवारी, आर. सी. एवं सिंह , बी.एन. (2016), कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृ० 34, 76, 96.
- Vennzetti, C. (1972): Land Use and Nature Vegetation in International Geography, Edited by W. Petter Adams & Fredrick M. Melleiner, Toronto University Press, pp.1105 - 1106.

